The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 2 | July-September 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

आजाद हिंद सरकार संरचना एवं महत्व

शाहनावाज आलम

शोध छात्र (नेट-जेआरएफ), प्रा॰ इतिहास एवं संस्कृति विभाग,

मा. ज्यों. फु. रुहेलखंड विश्वविद्यालय,बरेली

ईमेल: yzshahnawazalam@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Article History

Received : September 15, 2023

Accepted : September 27, 2023

Keywords :

समानांतर सरकार, आज़ाद हिन्द फौज, लक्ष्मीबाई बिग्रेड, सुभाष चन्द्र बोस

ABSTRACT

मेरे द्वारा लिए गए शोध पत्र का विषय 'आज़ाद हिन्द सरकार की संरचना' है। इसे सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापुर में भारत को स्वाधीनता दिलाने के लिए स्थापित किया था। इस सरकार का अपना ध्वज था, अपनी मुद्रा, अपना डाक टिकट, गुप्तचर सेवा और सशस्त्र सेना थी। इस सरकार के गठन को द्वितीय विश्व युद्ध की प्रष्टभूमि मे देखा जा सकता है। पहले कप्तान मोहन सिंह बाद मे रस बिहारी बोस से नेतृत्व मे इंडिया इंडिपेंडेंस लीग का गठन किया गया था। जापानियों से सुभाष को सहायता और समानता का आश्वासन के साथ आज़ाद हिन्द फौज का नेतृत्व स्वीकार करने का प्रस्ताव दिया था। सुभाष ने सिंगापुर से अस्थायी सरकार की घोषणा की। उन्होने कहा की इस सरकार का काम होगा कि वह भारत से अंग्रेज़ो और उसके मित्रों को निष्काषित करे। सुभाष ने स्वयं अध्यक्ष बनकर एक मंत्री समिति का गठन किया। इसमे सैन्य-असैन्य प्रतिनिधि शामिल थे। इस सरकार ने भारत को आज़ाद कराने के उद्देश से पूर्वोत्तर से जोरदार आक्रमण किया। परंतु दुर्भाग्य से यह असफल रहा। जायस लेब्रा ने इसके कारणों कि व्याख्या वायु सेना का अभाव, कमान श्रखला का टूट जाना, रसद आपूर्ति ना होना और जापानी असहयोग को अहम माना। भले ही यह अभियान असफल रहा। इसने लोगो को भाईचारे और एकता की भावना से लैस कर दिया। सैनिकों मे राष्ट्रवाद को जगा दिया। 1946 का बंबई मे

हुआ नौसैनिक विद्रोह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

आजाद हिंद सरकार या 'आर्जी हुकूमत ए आजाद हिंद' एक अस्थाई सरकार थी।[1] जिसे भारत को ब्रिटिश शासन से स्वाधीनता दिलाने के लिए 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर में स्थापित किया गया था। इसका नेतृत्व सुभाष चंद्र बोस कर रहे थे। वह स्वयं इस सरकार के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और युद्ध मंत्री थे। आजाद हिंद सरकार केवल एक नाम नहीं था, बल्कि नेता जी के नेतृत्व में इस सरकार ने हर क्षेत्र में नई योजनाएं बनाई थी । इस सरकार का अपना ध्वज था, अपना बैंक था, अपनी मुद्रा थी, अपना एक डाक टिकट था और सरकार की अपनी गुप्तचर सेवा व सशस्त्र सेना भी थी।[2] इस अंतरिम सरकार के ध्येय वाक्य इत्तेहाद (एकता), एतमाद (विश्वास) और कुर्बानी (त्याग)था।[3] इन बहुत ही उच्च आदर्शों के साथ सुभाष चंद्र बोस ने बहुत कम संसाधनों से ऐसे शासक के विरुद्ध लोगों को एकजुट कर लिया था, जिसके बारे में कहा जाता है कि उनके साम्राज्य का सूरज नहीं ढलता था।

इस शोध पत्र के माध्यम से भारत की स्वतंत्रता में आजाद हिंद सरकार के महत्व को स्थापित करना है। साथ ही आजाद हिंद फौज सरकार के गठन और उसकी संरचना पर प्रकाश डालने का प्रयास भी किया गया है। सुभाष चंद्र बोस, नेहरू और गांधी से बढ़कर धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति थे, सुभाष के राजनीतिक विचारों के माध्यम से वर्तमान में व्याप्त धार्मिक तनाव और असमानता जैसी समस्याओं का समाधान तलाशने का प्रयास भी शोध पत्र के माध्यम से किया गया है।

आजाद हिंद सरकार के गठन की पृष्ठभूमि को द्वितीय विश्व युद्ध के पार्श्व में देखा जा सकता है। इसी समय इसके गठित होने का मार्ग प्रशस्त हुआ। एशिया में द्वितीय विश्व युद्ध का प्रवेश जापानी साम्राज्यवाद के कारण हुआ। युद्ध के प्रारंभ में जापानियों की दक्षिण पूर्व एशिया की बृहत्तर एशिया सह-समृद्धि क्षेत्र की नीति में भारत को कोई स्थान नहीं दिया गया था। इस नीति के माध्यम से जापानी, पश्चिमी साम्राज्यवाद से एशियावासियों को स्वतंत्रता दिलाने के वादे कर रहे थे। लेकिन 1940 के वर्ष तक जापान एक भारत नीति भी तैयार कर चुका था।[4] और अगले वर्ष उसने प्रवासी भारतीयों से संपर्क करने के लिए मेजर फुजीवारा को दक्षिण पूर्व एशिया में भेजा।

दिसंबर 1941 तक जापानी सेना मलाया के जंगलों में प्रवेश कर चुकी थी। इस समय ब्रिटिश भारतीय सेना की पंजाब रेजीमेंट का एक युवा सेना अधिकारी कैप्टन मोहन सिंह ने मलाया के जंगलों में जापानियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। मेजर फुजीवारा के सहयोग से युद्ध बंदियों की एक

भारतीय सेना तैयार की गई।[5] जो भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्रता दिलाने के लिए जापानियों के सहयोग से आगे बढ़ेगी। आरंभ में इस फौज में केवल युद्ध बंदियों को शामिल किया गया किंतु बाद में इसमें बर्मा मलाया से सैनिकों को भर्ती किया जाने लगा।इस सशस्त्र सेना के शुरुआती क्षमता 16300 सैनिक थी।

जून 1942 में एक असैनिक राजनैतिक संगठन के रूप में एकजुट इंडिया इंडिपेंडेंस लीग का गठन किया गया। जो दक्षिण पूर्व एशिया के तमाम भारतीयों का प्रतिनिधित्व करती थी। इसके सदस्यों में प्रख्यात भारतीय प्रवासी जैसे के पी केशव मेनन, नाडियाम राघवन , प्रीतम सिंह, एस सी गोहो आदि थे। रासबिहारी बोस इस संस्था के प्रमुख नेता थे उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता लीग के उद्देश्यों में जापानियों की रुचि बढ़ाने की कोशिश की । 1942 में लीग के सम्मेलन में रासबिहारी बोस को लेकर भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों के मध्य मतभेद दिखाई दिए।[6] यह प्रतिनिधि जापान की स्थिति को देखते हुए, और भारत में जापानी दिलचस्पी के बढ़ने के कारण सावधान थे । अनिश्चितता की स्थिति में अगला सम्मेलन बैंकॉक में प्रस्तावित किया गया। इसी सम्मेलन में सशस्त्र सेना को भारत स्वतंत्रता लीग के अधीन रखे जाने की अनुशंसा की गई। साथ ही जापानी सरकार से विभिन्न मांगों का एक संकल्प भी प्रस्तुत किया गया इसमें आजाद हिंद फौज को एक सहयोगी का दर्जा दिए जाने की मांग की।

सितंबर 1942 तक आजाद हिंद फौज का औपचारिक गठन किया जा चुका था लेकिन जापानियों से उसका संबंध अभी भी संतोषजनक नहीं था, क्योंकि जापानी दोगलापन अब स्पष्ट रूप से सामने आने लगा था।[7] जापानी प्रधानमंत्री जनरल तोजो ने भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में ऐलान किया। लेकिन असल में जापानी आजाद हिंद फौज को एक सहयोगी सेना मानने के बजाय एक अनुचर शक्ति ही मानने को तैयार थे। कैप्टन मोहन सिंह ने स्वतंत्रता और सहयोगी स्थिति दिए जाने पर जोर दिया जिस कारण उनसे कमान छीन कर गिरफ्तार कर लिया गया। रासबिहारी बोस ने कुछ नरम शैली में इस बैनर को उठाया था परंतु इस कार्य के लिए वे काफी बुजुर्ग हो चुके थे। 1943 तक आजाद हिंद फौज का पहला प्रयोग लगभग असफल हो चुका था। मेजर फुजीवारा के अनुरोध पर कैप्टन मोहन सिंह ने आजाद हिंद फौज के नेतृत्व के लिए एक नाम सुझाया जो भारत से बाहर है और इस फौज को नेतृत्व प्रदान कर सकता है, वे थे सुभाष चंद्र बोस। जापानियों ने इस प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार किया और सुभाष को एशिया में लाने के लिए जर्मनी से बातचीत की ।

सुभाष चंद्र बोस 1941 में औपनिवेशिक सरकार की नजरबंदी से बचकर भागे । बोस को विश्वास था कि युद्ध में जर्मनी की जीत होगी, हालांकि उनको जर्मनों का सर्वाधिकारवाद या नस्लवादपसंद नहीं था। फिर भी वह यह विचार पालने लगे की धुरी शक्तियों की सहायता से भारतीय स्वाधीनता के लक्ष्य को आगे बढ़ाया जा सकता है। और देश की स्वतंत्रता की विभिन्न संभावनाओं को टटोलने लगे। कोलकाता में अपने निवास से फरार होकर बोस काबुल पहुंच गए और फिर इतावली पासपोर्ट लेकर रूस पहुंचे, सुभाष मार्च के अंत तक जर्मनी पहुंच चुके थे।[8] बर्लिन में नेताजी हिटलर और गोयबेल्स से मिले पर उनको कोई खास मदद नहीं मिली। हालाकि उनको अपना आजाद हिंद रेडियो शुरू करने की इजाजत दी गई और एक भारतीय दस्ता शुरू करने के लिए उत्तरी अफ्रीका में गिरफ्तार किए गए भारतीय युद्ध बंदी उनके हवाले कर दिए गए। पर वे इस समय तक भी धुरी शक्तियों से भारतीय स्वतंत्रता की कोई घोषणा नहीं करा सके थे।

जापानियों द्वारा आजाद हिंद फौज के नेतृत्व से संबंधित प्रस्ताव दिए जाने के बाद सुभाष पनडुब्बी से लंबी और कठिन यात्रा कर कर मई 1943 में दक्षिण पूर्व एशिया पहुंचे। तथा सहायता और बराबरी के व्यवहार के आश्वासन के बाद फौरन नेतृत्व संभाल लिया।[9] इसी के पश्चात 21 अक्टूबर 1943 को सुभाष ने आजाद हिंद सरकार का गठन किया। यह दिन भारत के लिए बहुत खास था । सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर में आजाद भारत की अस्थाई सरकार की घोषणा की साथ ही नए सिरे से आजाद हिंद फौज का गठन करके उसमें जान फूंक दी। 21 अक्टूबर को भारतीय स्वतंत्रता लीग के प्रतिनिधि सिंगापुर के कैथे सिनेमा हॉल में स्वतंत्र भारत की अंतरिम सरकार की स्थापना की ऐतिहासिक घोषणा सुनने के लिए इकट्ठे हुए थे। हॉल खचाखच भरा हुआ था खड़े होने के लिए 1 इंच भर भी जगह नहीं थी।

शाम को जैसे ही घड़ी में 4:00 बजे मंच पर नेताजी खड़े हुए। उन्हें घोषणा करनी थी जो उन्होंने दो दिन पहले रात में बैठ कर तैयार की थी । उन्होंने कहा, “अस्थाई सरकार का काम होगा कि वह भारत से अंग्रेजों और उनके मित्रों को निष्कासित करें। अंतरिम सरकार का यह भी काम होगा कि वह भारत की इच्छा के अनुसार और उसके विश्वास की आजाद हिंद फौज की सरकार का गठन करें।“ इस सरकार को जापान ने तुरंत ही और बाद में जर्मनी, इटली, फिलिपींस, कोरिया, चीन, मांचुको और आयरलैंड जैसे देशों ने मान्यता प्रदान की थी। सिंगापुर और रंगून में इस सरकार का मुख्यालय बनाया गया।

संरचना

सुभाष इस अंतरिम सरकार के अध्यक्ष बने इसके साथ ही एक मंत्री स्तरीय समिति का गठन किया गया। इस समिति में सैन्य और असैन्य प्रतिनिधियों को शामिल किया गया था। जिस का विवरण निम्न प्रकार था।[10]

1. लेफ्टिनेंट कर्नल एसपी चटर्जी	वित्त मंत्री
2. डॉक्टर लक्ष्मी सहगल (कैप्टन)	महिला संगठन मंत्री
3. श्री एस ए अय्यर	प्रचार एवं प्रसार मंत्री
4. लेफ्टिनेंट कर्नल जे के भोसले	आई एन ए प्रतिनिधि
5. लेफ्टिनेंट कर्नल लोकनाथन	आई एन ए प्रतिनिधि
6. लेफ्टिनेंट कर्नल एहसान कादिर	आई एन ए प्रतिनिधि
7. लेफ्टिनेंट कर्नल एन एस भगत	आई एन ए प्रतिनिधि
8. लेफ्टिनेंट कर्नल एम जेड कियानी	आई एन ए प्रतिनिधि
9. लेफ्टिनेंट कर्नल शाहनवाज खान	आई एन ए प्रतिनिधि
10.लेफ्टिनेंट कर्नल गुलजार सिंह	आई एन ए प्रतिनिधि
11.श्री रासबिहारी बोस	सर्वोच्च सलाहकार
12.श्री करीम जियानी	वर्मा से सलाहकार
13.श्री देवनाथ दासो	थाईलैंड से सलाहकार
14.श्री सरदार ईश्वर सिंह	थाईलैंड से सलाहकार
15.श्री डीएम खान	हॉन्ग कोंग से सलाहकार
16.श्री ए चेल्लप्पा	सिंगापुर से सलाहकार

सिंगापुर में आजाद हिंद सरकार की घोषणा करते हुए नेता जी ने दक्षिण पूर्वी एशिया में रहने वाले भारतीयों से सरकार के लिए संसाधन जुटाने का आह्वान किया। और कहा, “पूर्वी एशिया में रहने वाले 30 लाख भारतीयों के लिए समय आ गया है, के वे धन और जनशक्ति सहित अपने सभी उपलब्ध संसाधनों को जुटाए। आधे अधूरे उपाय से काम नहीं चलेगा। इस कुल लामबंदी से मुझे कम से कम 3 लाख सैनिक और 3 करोड़ों रुपयों की उम्मीद है” यहीं पर एक भाषण देते हुए सुभाष ने ‘दिल्ली चलो’ और ‘जय हिंद’ प्रसिद्ध नारे भी दिए।

उनके इन नारों को हर वर्ग के लोगों ने अपना ध्येय बना लिया था। विभिन्न समुदायों के मध्य वे समान रूप से स्वीकार्य थे। असल में सुभाष प्रकृति में समकालीन नेताओं में सबसे अधिक सेकुलर व्यक्तियों में से एक थे। उनका नेहरू और गांधी से धर्मनिरपेक्षता को लेकर मतभेद नहीं था उनका मतभेद तो स्वतंत्रता प्राप्ति के साधन को लेकर था। उन्होंने आजाद हिंद फौज की तीन बटालियन 'महात्मा गांधी बिग्रेड', 'जवाहरलाल बिग्रेड', 'सुभाष बिग्रेड' बनाएं। इनमें से दो के सैन्य कमांडर मुस्लिम थे। कर्नल शाहनवाज खान और एम जेड कियानी। उन्होंने अपनी सेना का नाम भी उर्दू 'आजाद हिंद फौज' चुना था। इसी समय उन्होंने आश्चर्यजनक प्रस्ताव रखा, कि उनकी फौज में महिलाओं की भी एक टुकड़ी होगी 'झांसी की रानी रेजिमेंट' उनकी बातों पर किसी को विश्वास नहीं होता लेकिन सुभाष में यह करके दिखाया।

सरकार की कमान संभाल कर सेना पुनर्गठन के पश्चात, नेता जी की सरकार ने ब्रिटेन के खिलाफ जंग का ऐलान कर दिया। उनकी मुख्य इच्छा जापानी सहयोग के द्वारा वर्मा से गुजरते हुए इंफाल और असम में प्रवेश करने की थी। इस अभियान को दो रेजीमेंट, जो शाहनवाज खान और कर्नलकियानी के नेतृत्व में थी, के माध्यम से अभियान प्रारंभ किया गया परंतु दुर्भाग्य से यह असफल रहा। जॉयस लेब्रा ने इसके कारणों की व्याख्या हैं, जैसे वायु सेना का अभाव, कमान श्रंखला का टूट जाना, रसद आपूर्ति ना होना और जापानी सहयोग का अभाव आदि। इस क्षति के बाद भी सुभाष आस लगाए रहे, उन्होंने सोवियत जाकर मदद पाने की सोची लेकिन रास्ते में 18 अगस्त 1945 को हवाई दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। यूं तो आज भी अनेक भारतीय नही मानते की उनकी मृत्यु हुई है। यह खबर से जैसे हर तरफ दुःख और हतोत्साह की लहर दौड़ गई और इस पूरे अभियान के अंत की सूचना बन गई।[11] गांधीजी ने इस अंत को अपने शब्दों में व्यक्त किया उन्होंने कहा, "हालांकि आई एन ए अपनी मंजिल तक पहुंचने में असफल रहा, लेकिन उन्होंने बहुत कुछ हासिल किया। सबसे बड़ी चीज तो यह है कि एक झंडे के नीचे भारत के तमाम धर्मों जात व नस्ल के लोगों को इकट्ठा किया। और उन्हें भाईचारे व एकता की भावना से पूरी तरह से लैस किया। सांप्रदायिक और क्षेत्रवाद जैसी सोच को बिल्कुल ही अलग कर दिया।[12]

महत्व

आजाद हिंद फौज का आखिरी अभियान बर्मा की पोपा पहाड़ी पर हुआ था। इसके बाद 20000 सैनिकों को पकड़कर पूछताछ हुई और उन्हें भारत लाया गया।[13] ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को लगा की उन पर मुकदमा ना चलाना साम्राज्य की कमजोरी की निशानी होगी, इसलिए कुल 10 मुकदमे चलाए गए।

जिनमें से सबसे पहला और सबसे मशहूर मुकदमा दिल्ली के लाल किले पर चल। जिसमें तीन अफसर प्रेम कुमार सहगल, गुरुदयाल ढिल्लो और शाहनवाज खान पर विश्वासघात, हत्या और हत्या के उकसावों के आरोप लगाए गए। इस मुकदमे ने भारतीय जनता और प्रेस का पूरा ध्यान खींचा। यह इसलिए भी अहम था क्योंकि लाल किले से ही आखरी मुगल बादशाह पर 1858 में यही से मुकदमा चलाया गया था । एक अजीब संयोग यह हुआ कि तीनों अभियुक्त अलग-अलग धर्मों से थे एक हिंदू, एक सिख और एक मुसलमान। इसलिए सभी समुदायों में इन अभियुक्तों के प्रति सहानुभूति की लहर देखी गई।

कांग्रेस ने इन गुमराह देशभक्तों के बचाव का फैसला करके तेज बहादुर सप्रू, जवाहरलाल नेहरू जैसे वकीलों के नेतृत्व में एक बचाओ समिति का गठन किया। इस समय चुनाव भी करीब थे और आजाद हिंद फौज के मुकदमे शानदार मुद्दे बन सकते थे। पहला मुकदमा 5 नंबर को शुरू हुआ और दो माह तक चला नेहरू के शब्दों में भारत में एक “जन उभार” फूट पड़ा था । जनता के अलग-अलग हिस्सों और समुदायों द्वारा ऐसी एकजुट भावनाएं भारतीय इतिहास में पहले कभी अभिव्यक्त नहीं की गई थी सभी पार्टियों ने यहां तक कि मुस्लिम लीग हिंदू महासभा ने मुकदमों को बंद करने के लिए प्रदर्शन किए।[14] देशभर के नगरों में 12 नवंबर को आजाद हिंद फौज दिवस मनाया गया।[15] मदुरै में प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने गोली चलाई। फिर देशभर में विभिन्न भागों में हंगामे हुए, छात्र पुलिस से टकराए और बाद में उसमें टैक्सी चालक, ट्राम मजदूर भी शामिल हो गए।[16]

भारी प्रदर्शनों के बीच ब्रिटिश सरकार का निश्चय हिल गया। उसके बाद भी अभियुक्तों को आरोपों के अनुसार दोषी करार दिया गया। लेकिन कमांडर इन चीफ (वायसरॉय) ने उनकी सजाएं रद्द कर दी। तीनों अफसर लाल किले से शूरवीरों की तरह बाहर निकले यह भारतीयों की ब्रिटिश साम्राज्य पर एक नैतिक विजय थी।

पूरे देश में इन अफसरों को श्रेष्ठ देशभक्त माना जा रहा था आम जनता सहित भारतीय सेना इनके कार्यों से उत्साहित और प्रभावित थी। जनवरी 1946 में वायु सेना के लोगों ने अपने कष्टों के लिए हड़ताल की, और सचमुच का गंभीर खतरा तो फरवरी 1946 में शाही नौसेना की खुली बगावत ने पैदा कर दिया। बाद में सरकारी जांच आयोग में यह बात उजागर हुई कि अधिकांश नौसैनिक राजनैतिक चेतना से संपन्न थे और आजाद हिंद फौज के प्रचार और आदर्श उसे गहराई से प्रभावित थे।[17] इन घटनाओं का बहुत बड़ा प्रभाव रहा कि अंग्रेज भारत में सत्ता हस्तांतरण के पक्ष में अपनी नीति बदलने को मजबूर हो गए।

बहुत बार यह सवाल उठाया जाता है कि यदि 'वह' आज जीवित होते तो भारत के बारे में क्या सोचते? इस प्रश्न का उत्तर नेता जी के विचारों के आधार पर दिया जा सकता है । भारत की वर्तमान उपलब्धियों को देखकर जहां एक ओर वे प्रसन्न होते, लेकिन दूसरी ओर बिभिन्न समुदायों के मध्य बढ़ता धार्मिक तनाव उनके ह्रदय को दुखी कर देता। क्योंकि देश के तरह-तरह के लोगों के मध्य एकता बनाए रखना उनके जीवन का लक्ष्य था। इसी एकता के आधार पर लोगों को निडर बनाकर, उन्होंने उन्हें विशाल शत्रु के समक्ष खड़े होने के सक्षम बनाया था। यह उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। उन्होंने दुनिया की पहली महिला रेजीमेंट बनाने की उपलब्धि भी प्राप्त की थी। समाज में मौजूद हर तरह की असमानता को समाप्त करना, उनके आजाद भारत का स्वप्न था। उन्होंने जाति व्यवस्था को पश्चगामी मानते हुए, अंतरजातीय विवाह पर भी जोर दिया, जबकि धार्मिक मेलजोल के मामले में वे अपने समकालीनों से भी आगे थे । वर्तमान में सुभाष की महत्ता उनके इन प्रगतिशील विचारों के कारण और भी अधिक हो जाती है। भारत को अपनी समस्याओं का समाधान को नेताजी के विचारों में तलाशते हुए नित उन्नति के पथ पर अग्रसर होना पड़ेगा। स्वयं अपने बल पर विकास पथ पर चलता हुआ एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर भारत, यहीं नेताजी के आजाद भारत का स्वप्न भी था।

संदर्भ सूची

1) घोष शंकर पॉलीटिकल आइडियाज एंड ,मूवमेंट इन इंडिया 1975, पृष्ठ-136
2) सरकार सुमित) मॉर्डन इंडिया ,1885-1947 (1983, पृष्ठ-412
3) रॉय आर सी, सोशलइकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल फिलोशोफी ऑफ नेताजी ,, पृष्ठ-51
4) द इंडियन नेशनल आर्मी एंड जापान2008 जॉयस लेब्रा ,, प०-60
5) मजूमदार के सुभाष चंद्र बोस इन ,शिशिर .नाजी जर्मनी10 पृष्ठ ,-14
6) द इंडियन नेशनल आर्मी एंड जापान2008 जॉयस लेब्रा ,, प० 43
7) बंधोपाध्याय शेखर2007 पलासी से विभाजन तक ,, पृष्ठ 465
8) इस यात्रा के ब्यौरे गार्डन 1990, पृष्ठ 415-28 पर है।
9) नेशनल आर्काइव ऑफ सिंगापुर2011 टोटल मोबिलाइजेशन ,
10) www.nas_gov/archivesonline/indian_national_Army
11)एच एन पंडित331 पृष्ठ ,नेताजी सुभाष चंद्र बोस ,
12)कादम्बिनी, अगस्त 2017, पृष्ठ 40, लेखिका आई एन ए से जुड़े प्रेम और लक्ष्मी सहगल की बेटी है।

13)बंदोपाध्याय शेखर467 पृष्ठ ,पलासी से विभाजन तक ,

14)गार्डन 1990, पृष्ठ 552

15)महाजन बीडी, हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया 1987, पृष्ठ 68-71

16)बंदोपाध्याय शेखर पलासी से विभाजन तक पृष्ठ 467

17)मजूमदार शिशिर10 पृष्ठ ,सुभाष चंद्र बोस इन नाज़ी जर्मनी ,-14

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Bose, Sugata. His Majesty's Opponent: Subhas Chandra Bose and India's Struggle Against Empire. Delhi: Penguin Books, 2011.
2. Nair, A.M. An Indian Freedom Fighter in Japan: Memoirs of A.M. Nair. Madras: Orient Longman, 1982.
3. Ohsawa J.G. Two Great Indians in Japan: Shri Rash Behari Bose and Netaji Subhas Chandra Bose. Calcutta: Sri K C Das, 1954.
4. Lebra, Joyce C. Japanese Trained Armies in Southeast Asia. New York: Columbia University Press, 1977.
5. Khan, ShahNawaz. My Memories of INA and its Netaji. Delhi: Rajkamal Publications.
6. Ghosh, K.K. The Indian National Army: Second Front of the Indian Independence Movement. Meerut: Meenakshi Prakashan, 1969.
7. Fujiwara Iwaichi. F. Kikan: Japanese Army Intelligence Operations in Southeast Asia During World War II. Hong Kong: Heinemann Educational Books (Asia) Ltd., 1983.
8. Cohen, Stephen P. The Indian Army: Its Contribution to the Development of a Nation. Berkeley: University of California Press, 1971.
9. Chaudhuri, Nirad.C. "Subhas Chandra Bose: His Legacy and Legend," Pacific Affairs, Vol. 26, no. 4 (December 1953),
10. Bose, Subhas Chandra. Selected Speeches of Subhas Chandra Bose. New Delhi: Publications Division, Reprint, 1983.
11. Bakshi A. "Azad Hind Expedition: A tribute to the braves of the Indian National Army". CUVL India.
12. Barker, A.J., The March on Delhi, Faber and Faber, London: 1963